महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान के 5वें स्थापना दिवस समारोह में अभिभाषण

स्थान :- भोपाल, दिनांक :- 8 अक्टूबर, 2012 समय :- सुबह 11.30 बजे

संस्थान के पांचवें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर आज यहां उपस्थित होकर, मैं स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूं। मुझे प्रसन्नता है कि इस परिसर में शिक्षा और समाज के लिए आवश्यक संभावना मूर्त होती नजर आ रही हैं। इसमें ज्ञान के हस्तांतरण और भविष्यत के मस्तिष्कों को गढ़ा जा रहा है।

देश के प्रथम ऊर्जावान और स्वप्नदर्शी प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नहेरू ने देश के विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों को आधुनिक भारत के मंदिर की संज्ञा दी थी। उन्होंने सिर्फ विकसित और समृद्ध भारत का सपना ही देश को नहीं दिया बल्कि उसकी प्रयोजना भी दी और उसका मार्ग भी प्रशस्त किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के तत्काल बाद 1950 में पंडित जी ने देश के पहले आई.आई.टी की स्थापना खड़कपुर में की थी। यह आधुनिक शिक्षा व्यवस्था की दृष्टि से महान क्रांतिकारी कदम था। यह प्रक्रिया तेजी से बढ़ी और देखते देखते छठवें दशक में देश की शिक्षा की दिशा निर्धारित करने वाले पांच आई आई टी संस्थानों की स्थापना हुई। औद्योगिक क्रांति के स्वप्नदृष्टा जमशेद जी टाटा के नेतृत्व में बैंगलुरू में विश्व स्तरीय विज्ञान संस्थान की स्थापना की जा चुकी थी।

पहले दौर के आई आई टी संस्थानों के बाद देश की उच्च तकनीकी शिक्षा की जरूरतों के मुताबिक वांछित गति से काम आगे नहीं बढ़ सका।

इसी के चलते पूर्व मानव संसाधन विकास मंत्री स्वर्गीय श्री अर्जुन सिंह ने दूसरी शैक्षणिक क्रांति का नेतृत्व संभाला। यह हरित क्रांति, श्वेत क्रांति के बाद का महत्वपूर्ण कदम था। उनके प्रयासों से देश के विभिन्न भागों में पांच भारतीय विज्ञान, शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थानों, आठ नए आई आई टी तथा आई आई एम तथा केन्द्रीय विश्वविद्यालयों की देशव्यापी श्रृंखला का निर्माण संभव हुआ। इस क्रांतिकारी कदम का बुनियादी मकसद समाज की जरूरतों को ध्यान में रखकर, खासकर वंचित वर्ग के विकास की मांग के अनुरूप, उत्कृष्ट उच्च शिक्षा केन्द्रों में संख्यात्मक और

गुणात्मक वृद्धि करना था। मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि भारतीय विज्ञान, शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थानों का आशा के अनुरूप विकास हो रहा है।

मुझे यकीन है कि भारतीय विज्ञान शिक्षा अनुसंधान संस्थान, भोपाल शीघ्र ही न केवल देश में बल्कि विश्व स्तर पर विज्ञान, शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में अपनी गुणवत्ता की मिसाल बनेगा।

मेरा आग्रह है कि इस संस्थान में युवाओं के उर्वर और कलपनाशील मस्तिष्क, विज्ञान शिक्षा के क्षेत्र ऐसे रूपाकार गढ़ें जायें जो न सिर्फ क्षेत्रीय विषमताओं का भेद खत्म करें बल्कि समाज के समग्र विकास में अपने बहुविध प्रयत्नों से योगदान करें।

मैं जब-जब शिक्षा के बारे में विचार करता हूं तो लगता है कि इसके कितने आयाम और कितने रूप रहे हैं। इस विविधरूपा शिक्षा ने आज सर्वथा भिन्न शक्ल ले ली है। यह शिक्षा के मूल उद्देश्यों से अलग होकर समाज के समक्ष समस्याओं और मूल्यों का संकट और चुनौती उपस्थित कर रही है। मुझे संदेह नहीं कि इस स्थिति में तभी सुधार संभव है जब इसके उद्देश्यों में समाज के पारम्परिक और समय-सिद्ध मूल्यों का संचरण भी हो। यह किसी भी समाज के लिए जरूरी है, खासकर भारतीय समाज के लिए, क्योंकि भारत की पहचान ही उसकी उच्च, समृद्ध और मजबूत मूल्य-व्यवस्था रही है।

यदि शिक्षा में मूल्य विहीनता जड़ें जमाती गयीं तो उसका परिणाम भयानक ही नहीं, सर्वनाशी होगा। समाजिक दायित्व-बोध और कमी न भूलने योग्य तत्वों का ध्यान समकालीन योजनाओं को रखना होगा। ऐसा करना वर्तमान और भविष्य की शिक्षा के लिए बहुत जरूरी है। सही मायनों में शैक्षणिक दृष्टि का विकास पर्यावरण-संवेदी, समाजिक मूल्यों के प्रति सरोकारी, व्यावसायिक और वैयक्तिक मूल्यों और गुणधर्मों पर आधारित होना चाहिए।

अधुनातन तकनीकों में विशेष ज्ञान अर्जित करने का अर्थ हरगिज यह नहीं है कि हम अपनी संस्कृति को ही विस्मृत कर दें। हमें देश की काल-सिद्ध मूल्य-सत्ता से विलगाव का कोई कारण या तर्क नजर नहीं आता। हमारे विज्ञान प्राध्यापकों, प्रौद्योगिकीविदों और विविध अकादमिक व्यवस्थाओं के तथ्य प्रशिक्षणार्थियों को ऐसी स्थाई प्रविधियों के द्वारा दीक्षित किया जा सकता है जो भौतिक विज्ञान में पर्यावरण के प्रति संवेदनशील, मूल्य पद्धति की संरक्षा और विस्तारण में तार्किक ढंग से काम कर सकें।

समाज की सभी छोटी-बड़ी समस्या के निदान में शिक्षा की, खासकर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी शिक्षा की निर्णायक भूमिका हो सकती है। लेकिन यदि विज्ञान का प्रयोग हमने पर्यावरण के प्रति

संवेदनहीनता एवं मूल्यहीनता के साथ किया तो वह समाज के अस्तित्व के लिए खतरनाक भी हो सकती है। भारत के संदर्भ विशेष में समस्त प्रायोजनाओं सभी महत्वपूर्ण पहलों की दिशा ऐसी होनी चाहिये जो गंगा-जमुना-नर्मदा की पावन धाराओं को सतत् प्रवहमान रख सके। क्योंकि ये भारतीय-सभ्यता की नियामक हैं। अपने आधारभूत मूल्यों की पुनस्र्थापना के लिए यह आवश्यक है। अब तक के प्रयासों से यदि यह संभव नहीं हो सका है तो अपनी नीतियों के पुनस्र्थापन का यही सही समय है। विश्व में जहां भी मानव सभ्यता ने चतुर्दिक सामाजिक विकास करते हुए फर्श से अर्श तक का सफर तय किया है- यकीनन उसका मूल आधार शिक्षा ही रही न कि सैन्य बल या धन बल।

जाहिर है कि हमें समाज के सांगोपांग विकास के लिए ऐसी शैक्षिक-प्रविधि का पुनराविष्कार करना है जिसमें पारंपरिक सामाजिक मूल्यों का समावेश हो- जिसके बिना शिक्षा अधूरी है। सामाजिक सोच से लैस विज्ञान ने सदा समाज की भलाई करने और अज्ञान के अंधकार को दूर करने का ही कार्य किया है। सामाजिक दायित्व बोध से लैस विज्ञान, वस्तुत: शिक्षा का ऐसा प्रारूप हो सकता है जो न केवल देश और दुनिया, बल्कि मानव मात्र की साझा संपत्ति की तरह उभरे।

बाजार की मांग और रोजगार के अवसरों के दबाव के चलते सामाजिक विज्ञान के विषयों के अध्ययन के प्रति इधर बहुत कमी आयी है। इस वृत्ति को रोकन समय की आवश्यकता है। हमें नहीं भूलना चाहिये कि भाषा और समाज विज्ञान ही शिक्षा का मूल आधार है। भाषा मूलत: हमारी चिंतन प्रणाली और उसकी अभिव्यक्ति की बुनियाद है- इसके बिना तो शिक्षा गूंगी और अर्थहीन है। सामाजिक विज्ञान समाज की ठोस सच्चाईयों का संज्ञान हमें देता है।

सामाजिक सरोकार के साथ विज्ञान ऐसा सर्व समावेशी मानवीय चेहरा है, जो आधुनिक शिक्षा प्रणाली का मूल आधार होना चाहिये। सनातन रूप से मानव द्वारा प्रस्तुत चुनौतियाँ ही मूलत: वैज्ञानिक प्रयोगों का आधार रही है। सच तो यह है कि विज्ञान की सच्ची प्रयोगशाला तो समाज ही है जहां नवाचार और प्रयोगों की आवश्यकता भी है और संभावनाएं भी। विज्ञान- शिक्षण का लक्ष्य सामाजिक उद्देश्यों से समरस होते हुए वैज्ञानिक चेतना के आधार पर ज्ञान का संधान करते हुए श्रेष्ठतर तक पहुंचना होना चाहिये।

जय हिन्द।